Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Vol. 1, Issue 1- 2016

ऋग्वेद में अक्ष

डा. ए.सुधा देवी

वैदिक सूक्तों में उपलब्ध मंत्रों से तत्कालीन सामाजिक स्थिति का परिलक्षण होता है। उस समय मानव प्रकृति के विविध रूपों की आराधना करता था, जिसका प्रतिबिंब सूक्तों में पड़ता है। वैदिक ऋषियों ने उन प्राकृतिक तत्वों जैसे–उषा, अग्नि, वरुण, सूर्य इत्यादि का महत्व मानव के जीवन में समझा और उसी की अर्चना अपने मंत्रों में प्रस्तुत की। इसके साथ ही समाज में प्रचलित विभिन्न क्रियाकलापों का भी उन्होंने दर्शन अध्ययन किया और उसी को उन्होंने अपने मन्त्रों में प्ररतुत किया। ऋग्वेद के दशम मंडल के अक्ष सूक्त के अध्ययन से हमको इसी बात का परिचय मिलता है।

अक्ष सूक्त ऋग्वेद के दशम मण्डल का 34वां सूक्त है। ऋग्वेद के समय में अक्ष मनुष्य के मनोविनोद का साधन बना हुआ था। बड़े बड़े राजा महाराजा और साधारण जन सभी जुए से अपना मनोरंजन करते थे। कहीं भी चौराहों, सड़क के किनारों इत्यादि पर लोग चौपड (इरिण) बिछाकर जुआ खेलते थे, जुआ के लिए जुआघर भी बने होते थे। जुआ में मुञ्जवान् पर्वत पर (मौञ्जवतः) पाए जाने वाले विभीदक वृक्ष के फलों का पांसों के रूप में प्रयोग किया जाता था। इन पांसों की संख्या 150 होती थी (त्रिपंचाशः)। जुआरी इनमें से कुछ फल उठा कर इरिण पर फेंक देता था।

इन फेंके हुए पासों को 4 से भाग देकर शेष अंकों के आधार पर उसे प्राप्त हिस्सा गिना जाता था। तत्पश्चात् 1, 2, 3 तथा 4 शेष रह जाने पर यह माना जाता था कि जुआरी को क्रमशः कलि, द्वापर, त्रेता और कृत की प्राप्ति हुई। इन उपर्युक्त चारों में कलि को हेयतम तथा कृत को श्रेष्ठतम माना जाता था।

सभा–गृह में द्यूत के नियमों का बड़ी सावधानी से पालन किया जाता था। राजा अपने अधिकारियों को इस कार्य के लिए नियुक्त करता था। लोग प्रारंभ में जुआ मनोविनोद के लिए खेलते थे, वे सज–संवर कर प्रातः ही जुआ खेलने के स्थल पर पहुंच जाया करते थे। धीरे–धीरे जुआ इतना अच्छा लगने लगा था कि लोग इस खेल के अभ्यस्त हो जाया करते थे और यह उनके लिए व्यसन बन जाया करता था। उनके पैर जुआ घर की ओर स्वतः ही बढ़ते जाते थे। शरीर स्फूर्ति और उत्साह से फूलते जाते थे। वे मन ही मन स्वयं से पूछते जाते थे कि क्या आज मैं जीतूंगा और जीतने के लिए अक्ष को बारंबार प्रणाम करते थे। इरिण पर गिरते हुए पांसे उनकी खेलने की इच्छा को और तीव्रतर करते हैं–

सभामेति कितवः पृच्छमानोजेष्यामीति तन्वा शूशुजानः।
अक्षासोऽस्य वितरन्ति कामं प्रतिदीव्ने दधत आकृतानि।।

अक्ष सूक्त में आगे विवरण मिलता है कि जुआरी को जीतने पर वह प्रसन्नताहोती है जो कि लोगों को पुत्र उत्पत्ति पर होती है। ये पांसे इतने प्रबल होते हैं कि जुआरी को मन ही मन तपाते रहते हैं (तापयिष्णवः)। वे उसकी समस्त शक्ति को खींच लेते हैं,

*एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत–विभाग, आत्माराम सनातन धर्म कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.

उसको सदा अपने आकर्षण–पाश में बांध कर रखते हैं। प्रस्तुत सूक्त का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि जो क्रीडा–विधान प्रारंभ में मनुष्य के लिए मनोविनोद का एक साधन बना था, वही कालांतर में मदिरा आदि मादक द्रव्यों के समान एक ऐसा व्यसन बन जाता था कि मनुष्य अपने दैनंदिन के अन्य आवश्यक कार्यों, उत्तरदायित्वों की ओर से विमुख हो जाता था। पत्नी बच्चे तथा परिवार के भरण–पोषण की ओर वह ध्यान देना बंद कर देता था। वह घर के बर्तन, स्त्री के आभूषण भी जबरन ले जाता था और उनको जुआ के लिए प्रयोग में लाता था। वह सदा इस आशा से खेलता था कि वह जुआ में जीतेगा। एक बार जीतने पर पुनः जीतने के लालच से खेलता चला जाता था और यदि वह हार गया तो भी जीतने का लोभ उसको जुआ खेलने के लिए विवश कर देता था। जुआरी की पत्नी येन–केन प्रकारेण गृहस्थी का भार अकेले ही उठाती थी स्वयं बिना साज श्रृंगार के अस्त व्यस्त रहती थी। वह सदा दुखी रहती थी, बच्चे तथा घर भी अव्यवस्थित रहते थे।

जुआरी को यह बात दुख पहुंचाती थी कि अन्य लोगों की पत्नियां संवरी रहती थीं और घर बड़े सुसज्जित रहते थे किंतु उसकी पत्नी इस प्रकार से उदासीन रहती थी। फिर भी वह स्वयं को इस व्यसन से विलग नहीं कर पाता था। कृषि यूं ही सूखी उपेक्षित रहती थी और बैलों का उपयोग नहीं हो पाता था। घर में जब जुआ के सभी साधन समाप्त हो जाते थे तो जुआरी पत्नी से झगड़ा करता। जुआ के लिए धन की आवश्यकता को अनुभव करता हुआ जुआरी अन्य लोगों से ऋण लेता और उनको समय पर ऋण वापस नहीं कर पाता था। पुनः धन की आवश्यकता होती थी तो ऋणदाताओं से मुंह छुपाता हुआ रात के अंधेरे में अन्य लोगों से ऋण लेने जाता था–

अन्येषामस्तमुपनक्तमेति।

जो व्यक्ति स्वयं ही अपने घर–परिवार का उत्तरदायित्व नहीं संभालता, पत्नी बच्चों की देखभाल नहीं करता,अन्य लोग ऐसे व्यक्ति की दुरवस्था का लाभ उठाते हैं।वे उसकी पत्नी के साथ दुर्व्यवहार करते हैं। उसे यह सब अच्छा नहीं लगता फिर भी इस स्थिति को सुधारने में वह असमर्थ है। ऋषि ने अक्ष के व्यसन में फंसे व्यक्ति की जिस अवस्था का वर्णन किया है वही अवस्था आज भी दिन–प्रतिदिन अनुभव की जाती है। जुआ तो जुआ, सट्टा व शेयर बाजार में लगे लोगों की भी यही स्थिति हो जाती है। यह व्यसन इन लोगों को उस सीमा तक ले जाता है कि कभी–कभी वे आत्महत्या तक करने को विवश हो जाते हैं। सूक्त में ऋषि जुआरी की उस अवस्था का संकेत देते हैं कि जब परिवार के सदस्य ऐसे व्यक्ति से विरक्त हो जाते हैं, वह उनके लिए एक समस्या बन कर रह जाता है और उसके परिवारी जन इस समस्या से छुटकारा पाना चाहते हैं–

नयताबद्धमेतद्।

किसी भी व्यसन से छुटकारा पाने के लिए आवश्यक है आत्म–नियंत्रण और दृढ़ता। मनुष्य यदि ठान ले तो कुछ भी कर सकता है और व्यसन से भी मुक्त हो सकता है। अक्ष सूक्त में ऋषि जुआरी से यह प्रण करवाते हैं कि वह अब जुआ नहीं खेलेगा चाहे कुछ भी हो जाए। क्योंकि जुआरी अक्ष की शक्ति को पहचान गया अतः वह अक्ष को ही बार–बार प्रणाम करता है, पासों के समक्ष सिर नवाता है और उनसे यह विनती करता है कि वे उसे अब मुक्त करें वह अपने दोनों हाथ सामने रख कर दिखाता है कि अब उसके पास जुआ खेलने के लिए धन नहीं है–

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved.

न धना रुणध्मि।दशाहं प्राचीस्तदृतं वदामि।

जुआरी कहता है कि वह अब एक सुव्यवस्थित जीवन व्यतीत करना चाहता है, कृषि करना चाहता है और कृषि करके वह परिवार का भरण–पोषण करना चाहता है यदि अक्ष देवता चाहे तो वह अपने आकर्षण पाश में किसी अन्य को बांध सकते हैं, हां, वे उसे मुक्त करें।

इस सूक्त के ऋषि कवष ऐलूष हैं और देवता अक्ष तथा कृषि हैं। ऋषि ने जहां अक्ष के प्राबल्य व सामर्थ्य की ओर संकेत किया है वहीं उन्होंने कृषि के महत्व की ओर ध्यान दिलाया है। कृषि तत्कालीन समाज के जीविकोपार्जन का प्रधान साधन था। मनुष्य कृषि करके सुखी व समृद्ध हो सकता था। ऋषि ने इस बात का अनुभव किया कि एक सुखी व निश्चित गृहस्थ जीवन के लिए एक व्यवस्था का अपनाना आवश्यक है और वह व्यवस्था कृषि में है, इसी बात को उन्होंने पुष्ट किया है–

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्तेरमस्व बहुमन्यमानः।
तत्र गावः कितवः तत्र जाया तन्मे विचष्टे सवितायमर्यः।।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. वैदिक संग्रह–डा. कृष्ण लाल,ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।
2. वेद परिचय–डा. कृष्ण लाल, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
3. वैदिक सूक्त संग्रह–गीता प्रेस गोरखपुर।
4. भारतगाथा–सूर्यकान्त बाली, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
5. प्राचीन भारतीय साहित्य का इतिहास–एम. विन्टर्निट्ज, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली।
6. महर्षि दयानन्द का संस्कृत साहित्य एवं राष्ट्र को योगदान–डा. रघुवीर वेदालंकार, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली।

Published on: 26th-May-2016

© Eureka Journals 2016. All Rights Reserved. *Peer Reviewed Referred and Impact Factor: 4.882* **ISSN: 2581-3501**